Godda College, Godda

...of the ...ber	Course	Sem	Subject	Title	Code
...os Kumar	B.Ed	II	T.C-201	Phases and Operation of Teaching Task	P41

Principal
M.C. [illegible]

T.C-201
Unit-3

PHASES AND OPERATIONS OF TEACHING TASK

(शिक्षण कार्य की अवस्थाएँ तथा क्रियाएँ)

शिक्षण की अवस्थाएँ :-

शिक्षण एक ऐसा कार्य है जिसको शिक्षक को उसे बेहतर ढंग से करने के लिए कई प्रकार के शिक्षण क्रियाएँ को करना पड़ता है।

जैक्सन (Jackson) 1966 के अनुसार - शिक्षण प्रक्रिया को वैज्ञानिक ढंग से निम्नांकित तीन भागों में बाँटा जा सकता है -

1. पूर्व क्रिया अवस्था (Pre-active Phase)
2. अन्तः प्रक्रिया अवस्था (Inter-active Phase)
3. उत्तर-क्रिया अवस्था (Post-active Phase)

1. पूर्व क्रिया अवस्था (Pre-active Phase) - इस अवस्था में शिक्षक छात्रों को ज्ञान प्रदान करने के लिए शिक्षण की योजना बनाता है और सिखाने की तैयारी करते हैं। वे सभी क्रियाएँ जो कक्षा में जाने से पूर्व शिक्षक द्वारा किये जाते हैं आते हैं। शिक्षण की इस अवस्था को 'शिक्षण नियोजन अवस्था' (Teaching Planning Phase) भी कहा जाता है। इसके अन्तर्गत शिक्षक शिक्षण योजना का चयन करते हैं, उसका नियोजन करते हैं ताकि अभीष्ट उद्देश्यों को प्राप्त कर सके। इसमें शिक्षक अपने शिक्षण को सुनियोजित तथा सफल बनाने के लिए चिन्तन करते हैं, जो निम्न

Scanned with CamScanner

साहित्य का अध्ययन करते हैं और दूसरों से विचार-विमर्श भी करते हैं। इसलिए इसे प्रत्ययात्मक या conceptulise की अवस्था भी कहा जाता है।

2. अन्तः प्रक्रिया अवस्था (Inter-active Phase)- इस अवस्था में वे सभी क्रियाएँ समावेशित होती हैं जो शिक्षक कक्षा में प्रवेश करने के समय से लेकर पाठ्य-वस्तु प्रस्तुत करने के समय तक करते हैं। वर्ग कक्ष में जहाँ शिक्षक एवं छात्र आमने-सामने होते हैं, शिक्षक शाब्दिक एवं अशाब्दिक प्रेरणा प्रदान करते हैं, पाठ के विभिन्न तत्वों की व्याख्या करते हैं, प्रश्न पूछते हैं और उत्तर सुनते हैं, साथ ही उन्हें लक्ष्य तक पहुँचाने का प्रयास करते हैं। पूर्व क्रिया अवस्था में तैयार की गई शिक्षण योजना को वास्तविक रूप देने के लिए विभिन्न प्रकार की व्यूह रचनाएँ, शिक्षण विधि, आदि का उपयोग करता है।

3. उत्तर-क्रिया अवस्था (Post-active Phase)- इस अवस्था में शिक्षण कार्य समाप्त होने के बाद सीखे गये कार्य का मूल्यांकन होता है। मूल्यांकन का कार्य उद्देश्यों के आधार पर किया जाता है। इसके लिए विभिन्न प्रकार की मूल्यांकन प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है। मूल्यांकन के द्वारा शिक्षक यह जानने का प्रयास करते हैं कि उनके शिक्षण का छात्रों पर कैसा प्रभाव पड़ा, क्या उनके व्यवहार में किस सीमा तक परिवर्तन आया और भविष्य में वांछित व्यवहार की प्राप्ति के लिए किस प्रकार के परिवर्तन शिक्षण में किये जाने चाहिए।

शिक्षण की क्रियाएँ (Operations of Teaching task) :-

शिक्षण की तीनों अवस्थाओं की अपनी विशिष्ट क्रियाएँ है जिनके माध्यम से शिक्षक अपना शिक्षण कार्य पूरा करते हैं। जिसका विवरण इस प्रकार है-

1. पूर्व-क्रिया अवस्था में शिक्षण क्रियाएँ (Teaching operations in pre-active phase) -

इस अवस्था में शिक्षक द्वारा निम्नांकित क्रियाएँ की जाती हैं।-

(i) उद्देश्यों का निर्धारण एवं निर्माण (Formulation of Goals) - कक्षा में प्रवेश करने से पूर्व शिक्षक पाठ के उद्देश्य निर्धारित करते हैं। वे उद्देश्यों को व्यावहारिक परिवर्तन के सन्दर्भ में परिभाषित करते हैं। उद्देश्यों का निर्माण छात्रों के पूर्व ज्ञान, अनुभव, कक्षा, स्तर, आयु, मानसिक योग्यता एवं पूर्व व्यवहार पर आधारित होता है।

(ii) पाठ्य-वस्तु का चुनाव (Selection of content) - शिक्षक निर्धारित उद्देश्यों के अनुसार पाठ्य-सामग्री का चयन करते हैं। पाठ्य वस्तु का चुनाव करते समय पाठ्य वस्तु की प्रकृति, स्तर, स्वरूप, भाषा व प्रतीक के साथ-साथ छात्रों के स्तर, आयु आदि का भी ध्यान रखा जाता है।

(iii) शिक्षण शैली तथा तत्वों की व्यवस्था सम्बन्धी कार्य (Arrangement of the elements & styles of Teaching) - चयनित पाठ्य वस्तु को कैसे, और किस शैली से पढ़ायें। इसके लिए पाठ के विभिन्न बिन्दुओं को मनोवैज्ञानिक एवं तर्कपूर्ण ढंग से क्रमबद्ध करते हैं ताकि छात्र अधिक सरलता से सीख सकें।

Scanned with CamScanner

(iv) शिक्षण की व्यूह रचनाओं के सम्बन्ध में निर्णय (Decision making about Strategies of Teaching) - शिक्षक छात्रों की आयु, परिपक्वता, योग्यताओं आदि के आधार पर ज्ञान प्रदान करने के लिए इस बात का चिन्तन करते हैं कि वह शिक्षण की कौन सी व्यूह रचनाओं का प्रयोग करें ताकि छात्र सरलता से ज्ञान प्राप्त कर सकें।

(v) शिक्षण युक्तियों का चुनाव (Strategies for specific subject-matter) - कक्षा में प्रवेश से पहले शिक्षक को पाठ्य वस्तु के भिन्न-भिन्न शिक्षण बिन्दुओं के स्पष्ट करने के लिए कौन सी शिक्षण प्रविधियों, उदाहरण तथा सहायक सामग्री का प्रयोग करना है का निश्चित कर लेना चाहिए।

B. अन्तः प्रक्रिया अवस्था में शिक्षण क्रियाएँ (Teaching operation in during interactive phase) -

शिक्षण की अन्तः प्रक्रिया में शिक्षक द्वारा कक्षा में किये जाने वाली समस्त क्रियाएँ आती हैं जिनमें से प्रमुख हैं-

(i) कक्षा आकार की अनुभूति (Sizing up the class) - कक्षा में प्रवेश करते ही शिक्षक छात्रों को सरसरी निगाह डालते हुए कक्षा आकार की अनुभूति प्राप्त करते हैं कि कक्षा में अच्छे एवं कमजोर छात्र कहाँ-कहाँ बैठे हुए हैं कहाँ-कहाँ उन्हें शिक्षण व्यवस्था में सहयोग मिलेगा एवं कौन से छात्र उसमें सहयोग नहीं दे पायेंगे।

दूसरी ओर छात्र भी शिक्षक को देखकर यह जानने का प्रयत्न करते हैं कि शिक्षक कितना योग्य है, कितनी प्रभावशीलता के साथ कक्षा का संचालन कर सकेंगे। अतः शिक्षक को कक्षा में काफी जागरूक रहना चाहिए। शिक्षक का हाव-भाव, वेशभूषा, बोलने का ढंग प्रभावशाली होना चाहिए

(ii) छात्रों का निदान (Diagnosis of Learner) - कक्षा के आकार की अनुभूति के उपरान्त छात्रों का स्तर, पूर्व ज्ञान, योग्यताएं, क्षमताएँ, अभिवृत्ति व अभिरुचियों का एवं कैसे और किस स्तर पर प्रारम्भ करना जान लेना चाहिए। शिक्षक प्रत्यक्षीकरण से छात्रों की योग्यता आदि का निदान करता है या सूचनाएँ एकत्रित करता है और उसके अनुसार शिक्षण की अनुक्रियाएँ प्रारंभ करता है।

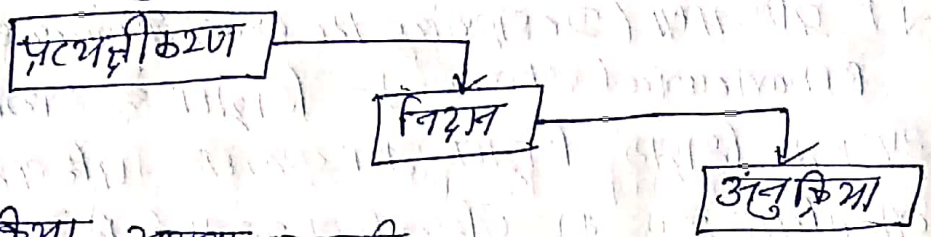

(iii) क्रिया अथवा उपलब्धि या निष्पत्ति कार्य (Achievement or Action operations) - शिक्षण में इनका सम्बन्ध उन क्रियाओं तथा प्रतिक्रियाओं या उपलब्धि से है जो शिक्षक और छात्र के मध्य कक्षा के अन्दर होती है। इन क्रियाओं को शाब्दिक अन्तः प्रक्रिया या अशाब्दिक अन्तः प्रक्रिया में बाँटा जा सकता है। इसमें उद्दीपकों का चुनाव, प्रस्तुतीकरण, पृष्ठ पोषण तथा पुनर्बलन तथा शिक्षण युक्तियों या प्रविधियों का प्रयोग करना अधिक महत्वपूर्ण क्रियाएँ हैं।

(iv) शिक्षण युक्तियों का विस्तार (Development of strategies) शिक्षक छात्रों को नया ज्ञान देने के लिए विभिन्न प्रकार के शिक्षण युक्तियों का प्रयोग करते हैं जिससे कि उनकी शिक्षण क्रियाएँ अधिक उपयोगी बन सकें। शिक्षण युक्तियों का विस्तार करते समय शिक्षक को पाठ्य-वस्तु के प्रस्तुतीकरण, अधिगम के प्रकार तथा छात्रों की पृष्ठभूमि (पूर्वज्ञान, आयु, कक्षा आदि) अभिप्रेरणा, अभिवृत्ति, आवश्यकताओं आदि का ध्यान रखना चाहिए।

Scanned with CamScanner

C उत्तर-क्रिया अवस्था में कार्य क्रियाएँ (Teaching operation in the Post-active Phase) - यह अवस्था शिक्षण के मूल्यांकन से सम्बन्धित है। शिक्षक ने जो कुछ भी सिखाया है उसका मूल्यांकन करके यह मालूम किया जाता है कि छात्रों ने उसे किस सीमा तक सीखा है। इस अवस्था में निम्नांकित क्रियाएँ अधिक महत्वपूर्ण हैं।-

(i) शिक्षण द्वारा व्यवहार परिवर्तन के वास्तविक रूप की परिभाषा (Designing the Exact Dimensions of Behavioural change) - शिक्षण के समाप्ति के उपरान्त शिक्षक, शिक्षण द्वारा व्यवहार परिवर्तन के वास्तविक रूप को परिभाषित करता है, जिसे मानदण्ड व्यवहार (Criterian Behaviour) कहते हैं। इसके लिए वह छात्रों में आये वास्तविक परिवर्तनों की तुलना अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन से करता है। यदि अधिकतर छात्रों में वांछित परिवर्तन आ गया तो शिक्षण सफल रहा और उद्देश्यों की प्राप्ति हो गया। यदि इसके विपरित परिणाम आये तो वह शिक्षण की असफलता की ओर इशारा करता है।

(ii) मूल्यांकन की उपयुक्त प्रविधियों का चयन - शिक्षक छात्रों के व्यवहार परिवर्तन के मूल्यांकन हेतु वस्तुनिष्ठ तथा वैध प्रविधियों का चुनाव करते हैं। मूल्यांकन करते समय ऐसी प्रविधियों का चयन करना चाहिए जो ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा गत्यात्मक पक्षों का भी सही मूल्यांकन कर सके।

(iii) प्राप्त परिणामों से शिक्षण नीतियों में परिवर्तन (Changing the Strategies in Terms of Evidence Gathered) - मूल्यांकन के द्वारा शिक्षक को अपने शिक्षण की कमियों तथा सीमाओं का ज्ञान प्राप्त होता है। अतः एक अच्छा शिक्षक मूल्यांकन से जानकारी प्राप्त करके अपने शिक्षण की नीतियों, व्यूह रचनाओं तथा प्रविधियों आदि में सुधार लाकर शिक्षण को और अधिक प्रभावशाली बनाते हैं।

उपर्युक्त सभी क्रियाएँ तथा अवस्थाएँ एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। एक अच्छा शिक्षक इन तीनों अवस्थाओं व क्रियाओं का नियोजन एवं व्यवस्थित ढंग से करके शिक्षण को प्रभावपूर्ण बनाने का प्रयास करता है।

उपर्युक्त तीनों अवस्थाओं तथा क्रियाओं को निम्नांकित चित्र द्वारा आरेख रूप में इस प्रकार प्रदर्शित किया जा सकता है।

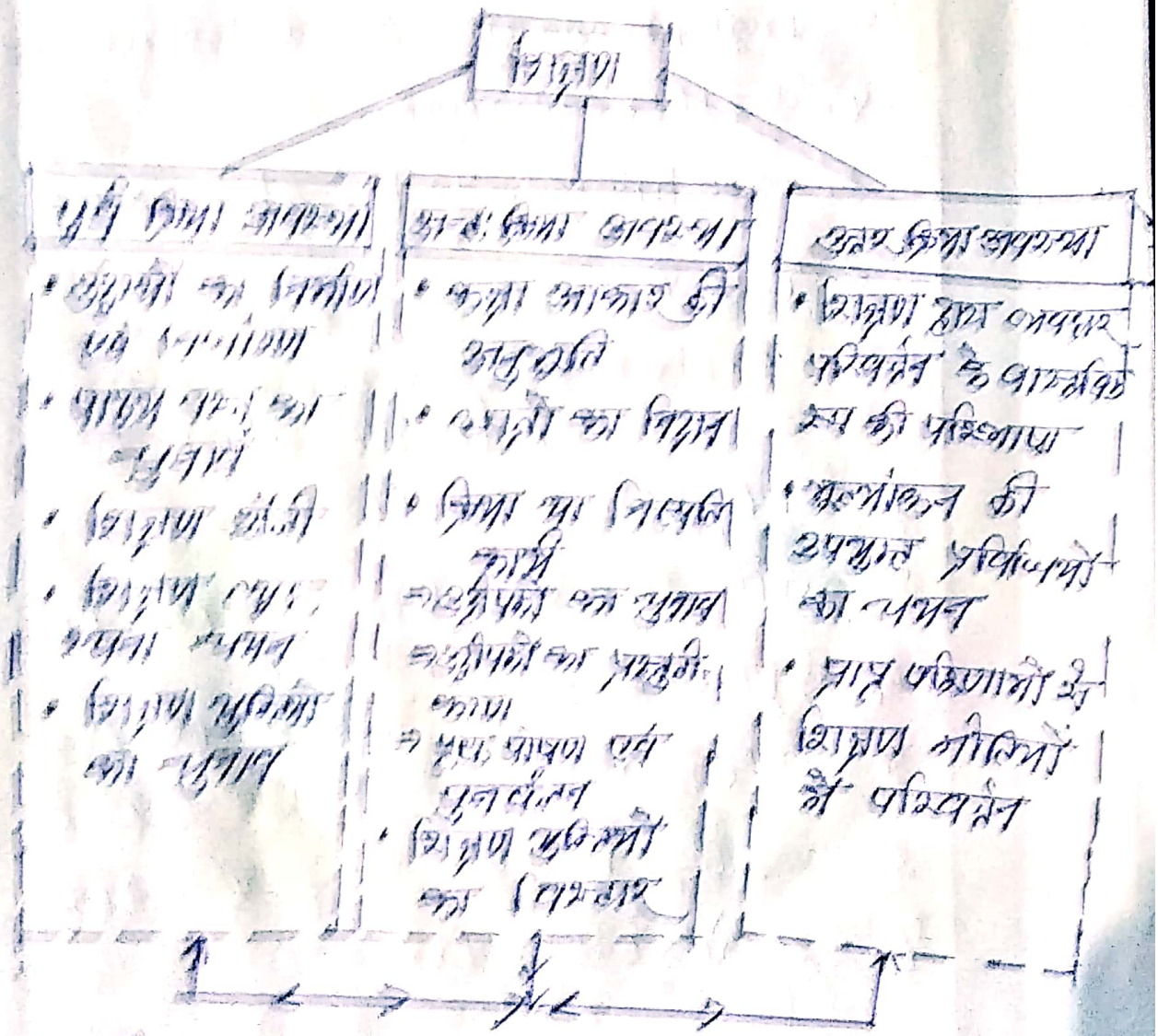

चित्र - शिक्षण अवस्था एवं क्रियाएँ